नारीसशक्तिकरण – पारिवारिक व सामाजिक हित में

विपक्ष

जय महेश|

सर्वप्रथम, एक नारी होते हुए भी नारी सशक्तिकरण का विरोध करने के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ |

मेरे दृष्टिकोण में तो नारी अशक्त तो तब थी जब वह शिक्षा से वंचित , घर में कैद, दहेज़ प्रताड़ित , सती होने मजबूर आदि कुप्रथाओंसे ग्रसित थी | पर आज की सशक्त नारी का विस्तृत दायरा मेरी समझ से परे है | कुछतो अपनी सशक्तता का प्रभाव व महत्व दिखाने इस हद तक आगे बढ़ रही है कि उन्हें सही-गलत का ध्यान नहीं व संबंधो की मर्यादा को तार-तार कर देने में भी संकोच नहीं| वे पुरुषों से बराबरी , उनकी तरह स्वतंत्र ज़िंदगी , अधिकार पाने में अपनी शान समझ रही है |जब ईश्वर ने नर-नारी की रचना व उनकी शक्ति में समानता नहीं की तब बराबरी कैसी ?

जिस शक्ति का तू गान करे , वाह री नारी तेरी शक्ति ,

जिस शक्ति की तू मांग करे , वो खुलापन है ना ही शक्ति |

विदेशी रंग में रंग कर , अपने जीवन को सजा मत दे ,

अपने ही घर में आग लगा , बाहर खड़ी मज़ा मत ले |

मेरा अभिप्राय यह नहीं , तू अपनी शक्ति घटा ,

पहले शक्ति का अर्थ समझ , फिर अपनी शक्ति बढ़ा |"

नारी , नाम व धन कमाकर , सशक्त तो हो रही है पर उसका दुष्परिणाम –

1. संयुक्त परिवार टूट रहे है |समयाभाव के कारण घर , परिवार, समाज व पति के प्रति दायित्व सही प्रकार से नहीं निभा पाती|
2. बच्चों को माँ की ममता से वंचित कर डे केयर , नौकर , ट्यूटर, हॉस्टलके भरोसे छोड़ना शान समझती है | उसमे बच्चे स्मार्ट तो हो रहे है पर , क्या संस्कार व स्वास्थ्य में कमज़ोर नहीं ? समयाभाव में अपने बच्चों को शारिरिक व मानसिक रूप से विकसित करने , विज्ञापन में आने वाले टॉनिक , सप्लीमेंट फ़ूड देकर फायदे से अधिक नुकसान दे रही है | बच्चो के होरमोंस में जो बदलाव दिख रहे है वे इन्ही सब

चीजों की देन है | बच्चे भी माँ की गैरमौजूदगी में फ़ास्ट फ़ूड , बाज़ार के स्नैक्स, मोबाइल में गेम ,चैट, टी.वी. आदि में अपना मन लगाते है | इसका परिणाम क्या अच्छा है ?

3. घर के बुजुर्ग नज़रअंदाज़ हो रहे है |उनके पास बैठने वाला , प्यार के मीठे बोल बोलने वाले के लिए - वे तरसते है| किसी के भी पास न तो उनके दुःख दर्द सुनने का समय है न ही उनसे अनुभव प्राप्त कर पारिवारिक व सामाजिक गतिविधियों को समझने का समय| आज सामाजिक व पारिवारिक कार्यक्रमों में नारियों की उपस्थिति बहुत कम रहती है | जवाब मिलता है – जॉब से समय नहीं मिल पाता , शनि-रवि मिलता है आराम के लिए | सामाजिक कार्यक्रम में नई पीढ़ी अपने विचार नहीं देगी तो समाज का विकास आज के दौर के अनुरूप कैसे होगा ?
4. अधिकतर नारी , नाम से सशक्त व शरीर से अशक्त हो रही है| उसके पास स्वयं के लिए समय नहीं है | फिरदेर रात थक कर घर आना | मान लो पैसे से सभी सुविधाएं – नौकर, कुक आदि मिल भी जायें , पर फिर भी बहार के तनाव से , पुरुषों की अपेक्षा , नारी जल्दी उबर नहीं पाती |'चिंता चिता सामान' के तहत अन्दर से टूटने लगती है | संघर्ष जब स्वयं से हो तो स्थितियां बड़ी विचित्र व कठिनहो जाती है | तनाव , चिंता , अवसाद, कुंठा, द्वंद्व, निराशा , भावनात्मक असंतुलन व भटकाव जैसी अनेक समस्याओं से ग्रसित हो जाती है | वह धन व सम्मान अधिक पाने की लालसा के दलदल में धसती चली जाती है |क्या नारी सशक्तिकरण से हम यही चाह रहे थे ?
5. मानो कोई आत्मनिर्भर नारी ने बहुत सफलता व नाम कमा लिया तो ईगो , अहंकार इतना बढ़ जाता है कि आत्मनियंत्रण नहीं रह पाता| प्रतिस्पर्धा व प्रतियोगी माहौल में संभल पाना एक बड़ी चुनौती साबित हो रहा है | परिणाम – घर में लड़ाई , मनमुटाव , डाइवोर्स , आत्महत्या जैसी स्थितियां अधिक निर्मित हो रही है |क्या यह परिवार व समाज के हित में है ?

आज के वर्त्तमान युग में फैशन में देखा-देखी , अंग प्रदर्शित करते कपडे पहनना , लेट नाईट पार्टीज में जाना ; ड्रिंक्स, स्मोकिंग, ड्रग्स लेना; रिश्तेदारो से ज्यादा दोस्तों को महत्व देना – ये सब अंतरजातीय विवाह , निर्भया कांड जैसी घटनाओं को आमंत्रित करतें है , बढ़ावा देते है |

6. आज की सशक्त लड़की कहती है - जब अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊ , फिर शादी करुँगी | लड़का भी सर्वगुणसंपन्न चाहिये – मैं चाहे माधुरी दीक्षित सी हूँ या ना , पर लड़का आमिर खान सा स्मार्ट चाहिए | परिणाम ? उम्र ३० से ऊपर ! फिर

अन्तर्जातीय विवाह !! फिर कहाँ रहेगा महेश्वरी समाज ? फिर जल्दी से माँ न बनने के लिए अनेकों कारण और बाद में कंसीव करने में परेशानी होती है |

7. कुछ तो अपने को अधिक सशक्त करने के लिए माता-पिता / सांस्-ससुर को छोड़ धन की चाह में विदेश बस जाती है | पर यही धन उनके जीवन के गोल्डन जुबली तक दवाइयों व डॉक्टरों की भेंट चढ़ जाता है | क्यों ? उनके व उनके परिवार के सही परवरिश के आभाव में ! और बैलेंस शीट में जमा व खर्च बराबर हो जाता है |

" वो बुलंदी किस काम की दोस्तों ,
इंसान चढ़े और इंसानियत उतर जायें |
ज़िन्दगी बस इतना दे तो काफी है ,
सर से चादर न हटें, पांव भी चादर में रहे | "

अतः नारी सशक्तिकरण समाज व परिवार के हित में तभी रहेगा जब वह इनकी मर्यादा में रह कर अपनी इच्छा व महत्वाकांक्षाओं पर ध्यान दे |

जय श्री कृष्ण

पूजा दम्माणी
राजनांदगांव जिला(C.G.)
महेश्वरी महिला संगठन
9098535356
9926355665